**** मौन****

अगर तुझे ये पहचानना है कि मैं हूँ कौन।
तो धारण कर अपने मन और मुख का मौन।
जब समाप्त होगी तेरे विचारों की हलचल।
तो अमृत धारा बहेगी तेरे मन में कलकल।
शुद्ध होगा मन और निकलेंगे सारे विकार।
मौन भट्टी से ही बदलेंगे तेरे सारे संस्कार।
तूँ भृकुटि में देख सिर्फ चमकती हुई आत्मा।
एक ये ही फरमान करता है तुझे परमात्मा।
इस अभ्यास से तूं भी आत्मा बन जाएगा।
तेरे भीतर का सारा देहभान निकल जाएगा।
भुलाकर देह का भान जब तूँ बनेगा फरिश्ता।
टूट जाएगा हर विकार से तेरा पुराना रिश्ता।
बढ़ता चल आगे तो मंजिल पर पहुँच जाएगा।
अगर रुका तो कल्प कल्प पीछे रह जाएगा।
अपने पुरुषार्थ का अहंकार आया तुझे अगर।
तो खो देगा तूँ अपनी मंजिल की सुहानी डगर।
बनकर निराकारी तूँ सच्चा सोना बन जाएगा।
स्वर्ग में जाकर तूँ लक्ष्मी नारायण पद पाएगा।

ओमशांति।
मुकेश भाई जी।